B.A Sem-III

* चार्वाक का ज्ञानमीमांसा :- चार्वाक दर्शन की ज्ञानमीमांसा के अनुसार प्रत्यक्ष प्रमाण ही एकमात्र वैध और विश्वसनीय साधन है। चार्वाक दर्शन (जिसे लोकायत भी कहा जाता है) प्राचीन भारत का एक प्रमुख भौतिकवादी और नास्तिक दर्शन है। इसकी ज्ञानमीमांसा सम्बन्धी विचार

(1). प्रत्यक्ष प्रमाण की प्रधानता - चार्वाक दर्शन केवल प्रत्यक्ष को ही ज्ञान का एकमात्र प्रमाण मानता है। प्रत्यक्ष का अर्थ - इन्द्रियों और विषय का सीधा संपर्क जब हमारी आँख, कान, नाक, जीभ या त्वचा किसी वस्तु के संपर्क में आती है, तब जो ज्ञान होता है, वही सत्य है। - प्रत्यक्ष दो प्रकार के होती है। बाह्य प्रत्यक्ष (पाँच ज्ञानेन्द्रियों द्वारा बाहरी दुनिया का ज्ञान) और आन्तरिक प्रत्यक्ष (मन या चेतना द्वारा सुख-दुख का अनुभव

(2) अनुमान प्रमाण का खंडन (Rejection of Inference) :- - चार्वाक ने अनुमान प्रमाण को पूरी तरह अस्वीकार कर दिया है। अनुमान का आधार व्याप्ति संबंध (अपरिवर्तनीय सह अस्तित्व, जैसे धुएं

B.A sem-III

और आग का संबंध) होता है। चार्वाक का कहते हैं कि हम भले ही कई बार धुएं के साथ आग देखे. लेकिन इस बात की कोई सौ प्रतिशत गारंटी नहीं है कि हर जगह धुआं आग के बिना नहीं हो सकता. इसलिए अनुमान से प्राप्त ज्ञान अनिश्चित और संदेहास्पद होता है, अतः वह वास्तविक ज्ञान नहीं है।

(3.) शब्द प्रमाण का खंडन :- चार्वाक वेदों या आप्त पुरुषों के वचनों को स्वतंत्र प्रमाण नहीं मानते, उनका कहना है कि दूसरों के कहे गए वचन या ग्रंथ तभी तक माने जा सकते हैं जब तक उनका समर्थन प्रत्यक्ष प्रमाण से न हो। बीना प्रत्यक्ष प्रमाण के केवल किसी के कहने पर विश्वास करना भ्रम या अंधविश्वास है।

(4). उपमान प्रमाण का अस्वीकार :- उपमान (साधर्म्य या तुलना द्वारा ज्ञान) को भी चार्वाक ने स्वतंत्र प्रमाण नहीं माना, क्योंकि यह भी प्रत्यक्ष और अनुमान पर ही निर्भर करता है।